ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 42 | 04 से 10 फरवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 | सम्वत् 2072 | मा. कृ. 11

गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर का 55वाँ वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

समाज में समानता स्थापित करने में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली दे सकती है महत्त्वपूर्ण योगदान

–चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

राज्य सभा सांसद शादीलाल बतरा ने आयुर्वेदिक भवन एवं चारदीवारी के लिए की अनुदान की घोषणा

आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान में हुड्डा जी का रहा सकारात्मक सहयोग

– स्वामी आर्यवेश

पूर्व मुख्यमंत्री ने किया चौ. रघुवीर सिंह स्मृति सभागार का उद्घाटन व ऋषि दयानन्द की प्रतिमा का अनावरण

गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर का 55वां दो दिवसीय वार्षिकोत्सव 31 जनवरी, 2016 को सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में समारोह पूर्वक सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। राज्यसभा सांसद श्री शादीलाल बतरा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, महम के विधायक श्री आनन्द सिंह डांगी, पूर्व मंत्री श्री कृष्णमूर्ति हुड्डा, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री चक्रवर्ती शर्मा, रोहतक के पूर्व विधायक भारत भूषण बतरा दयानन्द विश्वविद्यालय के डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. बलवीर आचार्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती आशा हुड्डा, डॉ. एस. वी. सिवाच, डॉ. सुखवीर सांगवान, श्री शम्भू शास्त्री, आचार्य हरिदत्त, विकास हुड्डा, श्री सूबे सिंह पूर्व एस. डी. एम, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी का सपरिवार अभिनन्दन किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य हरिदत्त जी, जगदीश जी व वेद प्रकाश आर्य ने चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा का सम्मान किया जबकि श्रीमती आशा हुड्डा को बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या तथा डॉ. सुमन, कविता चक्रवर्ती, श्रीमती विनीता हुड्डा ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कहा कि आर्य समाज की विचारधारा मुझे विरासत में मिली है। उन्होंने आर्य समाज के लिए किये अपने पारिवारिक योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि मेरे बड़े दादा जी राम जी लाल जी डी.ए.वी. के संस्थापक सदस्य रहे और मेरे दादा जी, चौ. मातुराम आर्य ने स्वयं ऋषि दयानन्द जी से यज्ञोपवीत धारण किया था। उन्होंने उस समय यह घोषणा की थी कि मेरी गर्दन कट सकती है लेकिन यज्ञोपवीत नहीं उतर सकता। वो शहीदे आजम भगत सिंह के चाचा के साथ भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रहे। उन्होंने कहा कि मेरे पूज्य पिता चौ. रणवीर सिंह जहां राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदार रहे वहीं संविधान निर्माता समिति के सदस्य भी रहे। उन्होंने कहा कि यहां तक कि मेरी पत्नी की पारिवारिक पृष्ठभूमि भी आर्य समाज की रही है और यही संस्कार हम आज अपने परिवार को भी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह आदि क्रांतिकारी आर्य समाज की ही देन है। गुरुकुलीय शिक्ष

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

धर्म शहीद बाल हकीकत राय और बसन्त पंचमी

- पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारत वर्ष) ईश्वर भक्त, धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मोहम्मद शाह रंगीला के शासनकाल में बसन्त पंचमी के दिन सन् 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी-भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएं बसन्त पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाती हैं।

हकीकत राय का जन्म सन् 1719 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल-विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानता वश हकीकत राय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया था। हकीकत राय के माता-पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थे इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे में (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उससे बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एकदिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकत राय को गालियां दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकत राय ने उन्हें सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकत राय को पुचकार कर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकत राय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत की। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकत राय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौंप दिया। अमीर बेग एक शरीफ आदमी था उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है, इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है, किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीर बेग ने सारा मामला लाहौर के नबाब सफेद खान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे और नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत राय की सुन्दरता, कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा।

'बाल हकीकत राय! मान तू, बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन, जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी, के संग निकाह करा दूंगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूंगा।।
रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।
इस सूबे का हर नर-नारी, तेरा हुक्म बजाएगा।।
सोच-समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।'

नवाब की बातें सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता पूर्वक नवाब से पूछा :- "अय नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं? उन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?" नवाब ने सिर नीचा करके कहा :- "हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवन भर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकत राय, अब तू ठीक तरह सोच-समझकर उत्तर दे बेटा।"

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकत राय मुस्कारते हुए बोला -

'यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनिया में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोरनर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम, कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।'

हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया। और हकीकत राय पर रौब जमाते हुए बोला:-

'तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।
छोटी-सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला :-

'तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा, तन नश्वर है, वेद, शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।
इस दुनिया का हर नर-नारी, अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।
धर्मवीर, बलवानों की गाथा नर-नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा :- 'अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूराकर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए।' जल्लाद ने अपने आसुओं को पोंछकर तलवार को उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढक गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक संसार में ऊँचा कर दिया। जब तक सूरज, चाँद, सितारे और पृथ्वी रहेगी यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों! कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में हुआ था तथा शाहजहां ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह कथन सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है। शाहजहां के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ई. में हुई थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ई. में हुआ था फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया? वास्तव में यह मुसलमान शासकों की चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्रों से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्द शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लालकिले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पिये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउस को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यों! आज भारत में छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाति का बोलबाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात-दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई, मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु-पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देश भक्त युवक-युवतियों की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है :-

हे भगवान दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी, आन-बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा-नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर ना आए।।

- ग्राम व डाकघर- बहीन, तहसील, हथीन, जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)

आ गया मधुमास प्यारा

–विमलेश बंसल 'आर्या'

आ गया मधुमास प्यारा, ओढ़कर नव वसन न्यारा।
प्रकृति का यौवन निराला, गा रहा स्वर तान प्यारा।।
नमन हे ईश्वर तुम्हारा, नमन हे ईश्वर तुम्हारा।।

1 कूप झरने नदी सागर। मधुर रस में तृप्त गागर।
झूमते सब पेड़ पौधे। नृत्य करते मोर मोहते।
कुहुक कोयल की निराली। मगन पुष्पम् डाली डाली।
पृथ्वी माता हरित आंचल। हरित चुन्नी हरित हर तल।
लेतीं जब अंगड़ाइयाँ तब। मन भ्रमर डोले हमारा।
नमन हे ईश्वर तुम्हारा, नमन हे ईश्वर तुम्हारा।
2 वाक्देवी सरस्वती माँ। मान करती हैं प्रकृति का।
गीत कविता लिख रहे कवि। 'विमल' बन सब दे रहे हवि।
रंग रहे रंगरेज़ चोला। बन बसंती मन ये डोला।
गा रहा वीरों की गाथा। धन्य हैं वे वीर माता।
हे हकीकत नाज़ तुम पर। कह रहा ऋतुराज प्यारा।
नमन हे ईश्वर तुम्हारा, नमन हे ईश्वर तुम्हारा।

329 द्वितीय तल संत नगर पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–110065
Mo.:8130586002, e-mail : Vimleshbansalarya69@gmail.com

"वैलेण्टाइन दिवस"
सन्देश प्रेम का, या वासना का?

— न्यायमूर्ति एम. रामाजोइस

वैलेण्टाइन दिवस पुनः आने वाला है, 14 फरवरी को। भारत के अनेक तरूण-तरूणियां भी इसे धूम-धाम से मनाएंगे। हमारे कुछ कथित बुद्धिजीवियों के द्वारा इसका खुला समर्थन, महापुरुषों के द्वारा वर्णित हमारे श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के क्षरण से सम्भावित विनाशकारी परिणामों की ओर, स्पष्ट संकेत करता है। दुष्प्रभावी परिणाम न केवल दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वरन् दावानल की भांति फैलते जा रहे हैं। प्रेम हम सबको जन्म से ही प्राप्त होता है अतः इसे हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की परम्परा के अनुसार हर पुरुष, स्त्री को एक दैवी सम्पदा के रूप में, न कि भोग विलास की एक सामग्री के रूप में देखे ऐसी अपेक्षा रहती है। मानव प्रकृति का गहन अध्ययन करने के पश्चात् हमारे पूर्वजों ने इस सांस्कृतिक मूल्य को विकसित किया था कि प्रत्येक नर, अपनी पत्नी के अतिरिक्त, प्रत्येक नारी के प्रति अपनी माता-बहन का भाव रखेगा। पुरुषों में स्त्रियों पर यौन आक्रमण करने की निकृष्ट वृत्ति रूपी विष का प्रभाव दूर करने वाली, अनिष्टरोधी औषधि के रूप में इस सिद्धान्त का विकास हुआ था। "सर्वेभवन्तु सुखिन" सम्पूर्ण मानव समाज के लिए शांति एवं सुख सुनिश्चित करने के लिए भारत तो उपर्युक्त एवं अन्य सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की प्रतिमूर्ति ही है। यह देखकर कि इस प्रकार के श्रेष्ठ सिद्धान्तों पर पश्चिम का भौतिकवादी, विषयभोग तथा वासना से प्रभावित चिन्तन कुठाराघात कर रहा है, स्वामी विवेकानन्द ने नीचे लिखे अनुपम शब्दों के माध्यम से मानव जाति को चेतावनी दी थी, "क्या भारत समाप्त हो जाएगा? तब विश्व से सारी आध्यात्मिकता समाप्त हो जाएगी। समस्त नैतिक पूर्णत्व समाप्त हो जाएगा। धर्म के प्रति समस्त माधुर्य एवं सहानुभूति समाप्त हो जायेगी। आदर्शवादिता समाप्त हो जाएगी और इनके स्थान पर वासना एवं कामुकता का साम्राज्य छा जाएगा। धन का वर्चस्व बढ़ेगा। धोखाधड़ी, छल, बल तथा स्पर्धा आनन्द के विषय चढ़ेगी।" कालान्तर से गांधी जी ने भी यह चेतावनी दी थी।

यह मेरा दृढ़ मत है कि हमारी सांस्कृतिक सम्पदा की सम्पन्नता अतुलनीय है। परन्तु हमने इसके महत्व को समझा नहीं है। यदि हम अपनी संस्कृति का अनुसरण नहीं करते है तो एक कौम के नाते हम आत्महत्या करेंगे।" (साबरमती आश्रम में स्मृति-पट पर अंकित सन्देश)

इसी प्रकार हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्य यह अपेक्षा करते हैं कि हम अपने माता-पिता को जीवनपर्यन्त नित्य प्रति, प्रभु तुल्य प्रेम एवं सेवा दें। वर्ष में एक बार परित्यक्त माता या पिता के जन्म दिवस पर एक मात्र पुष्प गुच्छ देने की परम्परा हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की नहीं रही है। हमारी संस्कृति की नैतिक संहिता के अनुसार न केवल विवाहेतर सम्बन्ध वर्जित है, वरन किसी भी प्रकार के वासनामय भाव से अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य महिला को कोई सन्देश, सुगन्धि, पुष्पहार या वस्त्र भेजना भी एक प्रकार का व्यभिचार है जो अत्यन्त घातक एवं अधर्म माना गया है। जहां तक प्रेम प्रदर्शन की बात है तो हमारे अनेक श्रेष्ठ पर्व हैं। उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है रक्षाबन्धन। अपने भाई की कलाई में राखी बांध कर बहन अपने उच्चकोटि के प्रेम का प्रदर्शन करती है। यह पर्व अब सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी मनाया जाने लगा है। कोई भी लड़की या महिला किसी भी पुरुष को जिसे वह भाई की तरह मानती है, राखी बांधती है और बदले में वह व्यक्ति मिठाइयां तथा वस्तुएं उस मुंह बोली बहन को देता है। इसी प्रकार शादी की सालगिरह पर, या पति अथवा पत्नी, जिसका भी हो, साठवें जन्म दिवस पर उत्सव का आनन्द लिया जा सकता है। हमारी संस्कृति में पति या पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करने का वर्ष में केवल एक ही दिन विधान नहीं है। नित्यमेव, इन शब्दों में प्रेम प्रकट करने का विधान है : 'पारस्परिक प्रेम, निष्ठा एवं विश्वसनीयता का धर्म, पति एवं पत्नी के द्वारा जीवनपर्यन्त निभाना होगा।"

स्वतन्त्रता के पश्चात् जब हमने अपने सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का पराभव होने दिया तो भयंकर परिणाम सामने आने लगे। ऐसे कम ही लोग होते हैं। जो अपने जीवन साथी को विशुद्ध प्रेम वश वैलेण्टाइन कार्ड भेजते हैं। अधिकांश युवक-युवतियां, पति-पत्नी या भावी पति-पत्नी, न होते हुए भी, वासना भाव से, न कि शुद्ध प्रेमवश, 14 फरवरी को वैलेण्टाइन दिवस मनाते हैं और आपस में वैलेण्टाइन-कार्डों का आदान प्रदान करते हैं। 14 फरवरी सन्त वैलेण्टाइन का जन्म दिवस है। किसी ऐसे पुरुष या महिला को जो आपस में पति-पत्नी या भावी पति-पत्नी न हों, प्रेम के नाम पर वासनामय सन्देश देने का कोई महत्व नहीं होता। इस सन्दर्भ में 'दि न्यू इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में दिया गया वर्णन उल्लेखनीय है:-

इन्साइक्लोपीडिया अमेरकाना का अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण संकेत देता है कि युवक-युवतियों की यौन प्रवृत्ति का नाजायज फायदा उठाकर ग्रीटिंग कार्ड बनाने वालों की पैसा कमाने की चाल का ही परिणाम होता है यह आदान प्रदान। ये कार्ड प्रायः पद्यात्मक एवं सुकोमल भाव वाले होते हैं,- किन्तु कभी-कभी ये हास्यास्पद और अभद्र भी होते हैं।"

वस्तुतः वैलेण्टाइन दिवस पर ग्रीटिंग कार्डों पर दिए गए सन्देशों के माध्यम से काम वासना परिलक्षित करना ही उद्देश्य होता है। पैसा कमाने के लालच के कारण ग्रीटिंग कार्ड बनाने वाले लोग, अपने समाज के युवक-युवतियों की भावनाओं का शोषण करते हुए कार्डों को लोकप्रिय बनाते हैं। इसके परिणामस्वरूप युवा वर्ग की नैतिक एवं शारीरिक शक्ति के ह्रास की उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती।

यह एक दुर्भाग्य का विषय है कि हमारी फिल्में तथा टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक, व्यावसायिक विज्ञापन, फैशन प्रदर्शनियां एवं अर्धनग्नता प्रदर्शन करने वाले लोग सौन्दर्य एवं यौन सम्बन्धों का बड़ा ही भद्दा चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार के वृहद स्तर पर प्रचारित प्रसारित अश्लील और कामुक विषय वस्तु से युवा वर्ग यह समझने लगता है कि जीवन का उद्देश्य केवल यौन आनन्द प्राप्त करना ही है, वह चाहे नैतिक हो या अनैतिक। उन व्यवसायी प्रचारकों को इस बात की कोई चिन्ता नहीं रहती कि युवा वर्ग के ऊपर इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा। इस सम्बन्ध में 'दैनिक हिन्दू' के एक पाठक, पोल्लूर के श्री एम. के. नाम्बियार ने 'हिन्दू' को पत्र लिखा था जिसमें इस दुश्चक्र की भर्त्सना करते हुए वैलेण्टाइन कार्डों में छपे शब्दों 'चुम्बन का अभ्यास करो, साथ-साथ झूमते हुए स्नान करो।" का उल्लेख किया गया है। इस सन्दर्भ में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर का 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' नामक चलचित्र (फिल्म) में प्रदर्शित कामुक दृश्यों को लेकर चलाए गए, राजकपूर बनाम दिल्ली प्रशासन (ए. आई. आर. 1980, एस. सी. 258) मुकदमे में कथन अति महत्वपूर्ण है। अश्लील फिल्मों की असफलता पर उनका कथन था:-

यह एक अत्यन्त शोचनीय विषय है कि अच्छाई के प्रचार-प्रसार का शक्तिशाली माध्यम सिनेमा आजकल फूहड़ प्रदर्शन की सूक्ष्म प्रक्रिया से लोक रूचि का अभद्रीकरण कर रहा है। यह किशोर-किशोरियों के दिमागों में लम्पटता की घुसपैठ करवाता है, व्यावसायिक विधि से लोगों को विषयासक्ति की ओर आकर्षित करने में दलाली करता है, और उनकी कामुकता को इस हद तक बढ़ावा देता है कि वे यौन सम्बन्धों के प्रलोभनों के आगे घुटने टेक देते हैं।" ..... ऐसी फिल्में जो लोकाचरण को दूषित करती हैं उन्हें उदारतापूर्वक प्रमाण पत्र मिल जाते हैं। संसद के द्वारा दिए गए विधानों का उद्देश्य होता है लोगों के सदाचार की रक्षा करना, किन्तु व्यवस्था के अन्दर विद्यमान कानून के शत्रु उनका विध्वंस करने पर तुले रहते हैं।"

यहां यह उल्लेख समीचीन होगा कि अमेरिका में यौन सम्बन्धों को आवश्यकता से अधिक महत्व देने के कारण परिवार टूट रहे हैं, वैवाहिक सम्बन्धों में कमी आती जा रही है, और लाखों बच्चे शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं का शिकार बन रहे हैं, "मैरिज इन अमेरिका- ए रिपोर्ट टु दि नेशन" शीर्षक से अध्ययन की एक रिपोर्ट, जो 1995 में प्रकाशित हुई थी, यह चेतावनी देती है:-

"यदि यही हालात चलते रहे तो इसका अर्थ सांस्कृतिक आत्महत्या से बढ़कर कुछ नहीं होगा।" (स्टेट्समैन, बुधवार, मई 31, 1995, पृष्ठ 6)

यह एक दयनीय स्थिति है कि हमारे समाज के कुछ कथित बुद्धिजीवी वैलेण्टाइन दिवस का समर्थन करते हैं, जबकि इस दिन फैशन शो एवं अर्द्धनग्न नृत्यों के माध्यम से कामुकता की नुमाइश लगाई जाती है। इन सभी के पीछे मंशा होती है केवल वासना एवं कामुकता। निश्चित रूप से इनका उद्देश्य वह शुद्ध प्रेम नहीं होता है जो हमारी संस्कृति में समझा एवं आचरित किया जाता है।

जब अपने पास इतने उच्चकोटि के जीवन मूल्य हैं, तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड़ में वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन, स्वास्थ्य एवं चरित्र का क्षरण करते हैं।

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वर्ग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेह पूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हैं तो वे अपनी गलती समझेंगे और वैलेण्टाइन दिवस मनाने की अवांछनीय प्रथा को तिलांजलि दे देंगे। इसलिए हमको अपने बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन दिवस मनाना बेकार है।

जब अपने पास इतने उच्चकोटि के जीवन मूल्य हैं, तो कोई वजह नहीं है कि हमारा युवा वर्ग वैलेण्टाइन दिवस का शिकार बने जो प्रेम की आड़ में वासना की ओर आकर्षित करते हुए धन, स्वास्थ्य एवं चरित्र का क्षरण करते हैं। यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारा युवा वर्ग केवल दिग्भ्रमित है। यदि स्नेह पूर्वक उनको यह बताया जाए कि वैलेण्टाइन दिवस के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या है और इनके परिणाम क्या होते हैं तो वे अपनी गलती समझेंगे और वैलेण्टाइन दिवस मनाने की अवांछनीय प्रथा को तिलांजलि दे देंगे। इसलिए हमको अपने बच्चों को यह समझाना चाहिए कि वैलेण्टाइन दिवस मनाना बेकार है।

(लेखक पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश हैं।)

वैदिक पुत्री पाठशाला, नई मण्डी मुजफ्फरनगर में सामवेद यज्ञोत्सव सम्पन्न

जीवन जीने की कला यज्ञ से सीखें

– स्वामी आर्यवेश

समस्त श्रेष्ठ कर्म यज्ञ होते हैं

– देवेन्द्र पाल वर्मा

नई पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए यज्ञ सर्वोत्तम माध्यम है – अरविन्द कुमार

यज्ञ संसार का सबसे श्रेष्ठ कर्म होता है – आचार्या प्रियंबदा वेद भारती

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में 25 जनवरी, 2016 को वैदिक पुत्री पाठशाला नई मण्डी मुजफ्फरनगर में सामवेद यज्ञोत्सव का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियंबदा वेद भारती थीं तथा उनकी छात्राओं ने सस्वर वेदपाठ का कार्य संभाल रखा था। यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने हजारों की संख्या में उपस्थित छात्राओं एवं नगर के गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित करते हुए उद्‌घाटित किया कि व्यक्ति को जीवन में जीने की कला यज्ञ से सीखनी चाहिए। उन्होंने बताया देवयज्ञ की प्रक्रिया में जैसे घृत, सामग्री, समिधा आदि पदार्थ यज्ञ में आहुति बनकर अपने अस्तित्व को मिटा देते हैं और चारो तरफ के वातावरण को सुगन्धित कर देते हैं उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को परिवार, समाज एवं राष्ट्र में समर्पण एवं त्याग के द्वारा अपने जीवन की सुगन्धि फैलानी चाहिए। औरों के लिए जीना और स्वयं कष्ट उठाना सही मायनों में यज्ञ की भावना है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान में यज्ञीय भावना लोगों के जीवन में दिखाई नहीं देती जिसके कारण पूरे समाज में अशांति, घृणा, द्वेष तथा नफरत का वातावरण बना हुआ है। स्वामी दयानन्द जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि मनुष्य कौन? मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं, कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। यह स्थिति व्यक्ति के जीवन में यज्ञ की भावना समझने से आ सकती है।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने बताया कि जीवन में किये जाने वाले सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहे जाते हैं। अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि हम सदैव परोपकार एवं धर्म के रास्ते पर चलें तथा निष्काम सेवा करते हुए हम जीवन में यज्ञ का फल प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि देश और समाज के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करना और इसके बदले किसी प्रकार के फल की इच्छा न रखना यही वास्तविक यज्ञ है।

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने स्वामी आर्यवेश जी का मुजफ्फरनगर पधारने पर प्रान्तीय सभा की ओर से स्वागत किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक एवं कन्या गुरुकुल पाठशाला के प्रबन्धक श्री अरविन्द कुमार ने घोषणा की कि वे वर्तमान पीढ़ी के छात्र–छात्राओं को संस्कारित करने के लिए यज्ञ को सबसे सशक्त माध्यम मानते हैं और भविष्य में अपनी सभी शिक्षण संस्थाओं में बड़े–बड़े यज्ञ करवाकर छात्र–छात्राओं को यज्ञ के प्रति प्रेरित करने का कार्य करेंगे। श्री अरविन्द कुमार ने स्वामी आर्यवेश जी, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, डॉ. प्रियंबदा वेद भारती जी तथा आचार्य सन्तराम जी का माल्यार्पण एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली रहा।

आर्य कन्या सदन फरीदाबाद में गणतन्त्र दिवस समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न

अनाथों का सम्बल बनना ही सबसे बड़ी मानवता

– स्वामी आर्यवेश

फरीदाबाद सैक्टर–15 में स्थित आर्य कन्या सदन एक ऐसी प्रगतिशील संस्था है जहां अनाथ लड़कियों का लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा एवं पुनर्वास सुचारू रूप से किया जाता है। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आर्य कन्या सदन फरीदाबाद में 26 जनवरी, 2016 को शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कन्या सदन की छात्राओं ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने देशभक्ति के गीत, देशभक्ति के भाषण एवं नाटक प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को अत्यधिक प्रभावित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संस्था के संचालकों, व्यवस्थापकों एवं छात्राओं को गणतन्त्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हम सभी को अपने देश के प्रति वफादार होना चाहिए और व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर देशहित के लिए कार्य करना चाहिए। स्वामी जी ने देश के शहीदों को स्मरण करते हुए उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्रोताओं का आह्‌वान किया कि इन बलिदानी शूरवीरों की कीमती शहादत से मिली आजादी को अक्षुण्ण बनाये रखना हम सबका कर्त्तव्य है। स्वामी जी ने आर्य कन्या सदन के पदाधिकारियों को इस बात के लिए बधाई दी कि वे उन छात्राओं के लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा में कृत संकल्प हैं जिनका कोई सहारा नहीं है, जो अनाथ हैं। इस अवसर पर स्वामी जी ने छात्राओं को पारितोषिक भी भेंट किये। समारोह में आर्य कन्या सदन के प्रधान श्री राजपाल, मंत्री श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट तथा श्री लाला वेगराज गुप्ता, श्री ऋषिपाल भड़ाना, श्री जगदीश आर्य, श्री सुभाष चन्द्र, श्री नरेश गोयल आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य समाज की विचारधारा मुझे विरासत में मिली है – भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

पूर्व मुख्यमंत्री का किया गया परिवार सहित अभिनन्दन

ा प्रणाली पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि वैदिक शिक्षा से व्यक्ति के जीवन में संयम, सदाचार, परोपकार व देश भक्ति की भावना बढ़ती है तथा समाज में समानता की भावना भी गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। उन्होंने पूरे परिवार का अभिनन्दन करने पर गुरुकुल के अधिकारियों का धन्यवाद भी किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल के प्रधान श्री जगदीश जी मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य ने भूपेन्द्र सिंह हुड्डा तथा आशा हुड्डा को चारों वेदों का सेट भेंट स्वरूप प्रदान किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के द्वारा चलाये ज रहे बेटी बचाओ अभियान में श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा किये गये सकारात्मक सहयोग की प्रशस्ति करते हुए कहा कि सामाजिक परिवर्तन तभी आता है जब कोई भी सामाजिक संगठन जागरूकता फैलाने का कार्य करे तो सरकारें भी उनमें निष्ठा से सहयोग करें। स्वामी जी ने देश में बढ़ती जा रही नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, अश्लीलता, महिलाओं और किसानों पर हो रहे अत्याचार पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि यह समस्यायें आज चुनौती बनकर खड़ी हैं और इसका निदान आर्य समाज को ही करना है। अतः इन समस्याओं के विरुद्ध आम जनता को साथ लेकर आर्य समाज राष्ट्रव्यापी चेतना अभियान प्रारम्भ करने जा रहा है। आर्य समाज आम आदमी की आवाज बनकर उसके साथ खड़ा होगा और सारे देश में आन्दोलन करने के लिए योजना बना रहा है।

राज्यसभा सांसद श्री शादीलाल बतरा ने अपने उद्बोधन में नारी शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि नारी शिक्षा से समाज का विकास शीघ्रता से होगा क्योंकि नारी दो कुलों की शान व निर्माता होती है। उन्होंने आयुर्वेदिक भवन व चार दिवारी बनाने के लिए अनुदान की भी घोषणा की।

महम के विधायक श्री आनन्द सिंह डांगी ने आर्य समाज के द्वारा की गई सामाजिक सेवाओं की चर्चा करते हुए कहा कि जब कभी देश में सामाजिक बुराईयाँ बल प्राप्त करती हैं तो आर्य समाज ही उनसे डटकर मुकाबला करता है। उन्होंने कहा कि जीवन में संघर्ष की प्रेरणा आर्य समाज से प्राप्त होती है।

पूर्व मंत्री श्री कृष्ण मूर्ति हुड्डा ने इस अवसर पर कहा कि समाज के नवनिर्माण में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है आर्य समाज ने देश के लिए बहुत कार्य किया है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री चक्रवर्ती शर्मा, रोहतक के पूर्व विधायक श्री भारत भूषण बतरा, दयानन्द विश्वविद्यालय से पधारे श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. बलवीर आचार्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती आशा हुड्डा ने भी इस अवसर पर अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर गुरुकुल समिति की ओर से नारी शिक्षा व गुरुकुलों में विशेष सहयोग के लिए परिवार सहित अभिनन्दन किया गया तथा अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया गया। अभिनन्दन पत्र के अतिरिक्त श्री कृष्ण का गीता उपदेश दर्शाता स्मृति चिन्ह, शॉल, ऋषि दयानन्द का चित्र तथा ओ३म् पट्ट देकर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में श्री शादीलाल बतरा, आनन्द सिंह डांगी, चक्रवर्ती शर्मा, कृष्ण मूर्ति हुड्डा, डॉ. एस. वी. सिवाच, डॉ. सुखबीर सांगवान, शम्भू शास्त्री, आचार्य हरिदत्त, विकास हुड्डा तथा पूर्व एस. डी. एम. श्री सूबे सिंह का सत्यार्थ प्रकाश तथा स्वामी दयानन्द जी का चित्र भेंटकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर गुरुकुल में नवनिर्मित सभागार जो कि चौ. रघुवीर सिंह जी की स्मृति में बनाया गया है का उद्घाटन पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, श्री शादीलाल बतरा, श्री आनन्द सिंह डांगी, श्री भारत भूषण बतरा व स्वामी आर्यवेश

जी द्वारा किया गया। समारोह अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इससे पूर्व 30 जनवरी, 2016 को आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर के 55वें वार्षिकोत्सव का विधिवत उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में डॉ. रमेश गुगनानी व रवि गुगनानी निदेशक रोजरी पब्लिक स्कूल रोहतक ने किया। ध्वजारोहण के पश्चात् आर्य समाज के वरिष्ठ नेता त्यागी, तपस्वी, आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने एक स्वर से उनके निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया।

इससे पूर्व आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आयोजित समाज परिवर्तन सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे रोहतक के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री मनमोहन गोयल का गुरुकुल प्रबन्ध समिति के अधिकारियों ने स्मृति चिन्ह व शॉल देकर अभिनन्दन किया। सम्मेलन के मुख्य वक्ता दयानन्द विश्व विद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. बलवीर आचार्य ने कहा कि यदि आज शिक्षा, संस्कृत व संस्कृति तथा सभ्यता की सुरक्षा करनी है तो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनः लागू करना पड़ेगा। वैदिक विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाना है तो हर जगह गुरुकुलों की स्थापना करनी पड़ेगी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज समाज के नव निर्माण की जरूरत है और यह कार्य युवा वर्ग के द्वारा ही किया जा सकता है। उन्होंने भटकती हुई युवा शक्ति को संस्कारित करने तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों से परिचित कराने पर जोर दिया।

दयानन्द विश्वविद्यालय के वर्तमान संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने समाज परिवर्तन का एक नया दौर शुरू किया था। उन्होंने समाज में फैली बुराईयों की जड़ताओं को तोड़ने का कार्य किया और एक नये समाज की नींव रखी। मुख्य अतिथि श्री मनमोहन गोयल ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा से विद्यार्थी का चरित्र निर्माण होता है और आज चरित्र निर्माण की सबसे अधिक आवश्यकता है।

पानीपत से पधारे प्रसिद्ध गायक श्री रामनिवास आर्य ने क्रांतिकारियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की आजादी लाने वालों ने अपने जीवन की आहुतियाँ दे दी। तब आज हम स्वतन्त्रता का सुख भोग रहे हैं। उन्होंने गीत सुनाया कि "काट के बेड़ी आजाद किया भारत देश दयानन्द ने।" सुमित्रा वर्मा ने भी देशभक्ति से ओतप्रोत एक सुन्दर गीत सुनाया।

आज पिछले 10 दिन से चले आ रहे युवा चरित्र निर्माण व योग प्रशिक्षण शिविर का समापन व्यायाम प्रदर्शन के साथ हुआ। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के मुख्य आचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य के निर्देशन में सोनू आर्य व गजनूप सिंह पी. टी.आई. ने युवाओं के करतब दिखाये। जिनमें लाठी चलाना, जूडो, कराटे, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, स्तूपनिर्माण आदि ने श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। गुरुकुल के प्रधान डॉ. जगदीश व कार्यकारिणी ने रवि गुगनानी, राकेश गुगनानी, जितेन्द्र सहारन, रामचन्द्र ठेकेदार (टिटौली), करतार सिंह, सुमित्रा वर्मा, डॉ. सुरेन्द्र, डॉ. बलवीर आचार्य का स्मृति चिन्ह व शॉल देकर सम्मान किया। मंच का सुन्दर संचालन गुरुकुल के मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य ने किया। इस कार्यक्रम में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, संयोजक बहन प्रवेश आर्या तथा शम्भू शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर स्वामी सोम्यानन्द–मथुरा, स्वामी धर्मानन्द–कौंकेरा, विकास हुड्डा, विवेकानन्द शास्त्री, आचार्य सन्तराम, राजेन्द्र आर्य, महिपाल सिंह व गुरुकुल के शिक्षक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की सफलता में महिपाल सिंह, गजनूप सिंह, यशपाल, शम्भू शास्त्री, जोगेन्द्र, प्रेम अहलावत, मनोज कुमार, सुदर्शन, जसवन्त सिंह, राजेन्द्र आर्य, मोनू आर्य, विवेकानन्द शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर

9वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : 2 मार्च, 2016 (बुधवार) से 13 मार्च, 2016 (रविवार) तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाँखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262–286900

गुरुकुल कोसरंगी में राज्यस्तरीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न

छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम् और गुरुकुल के संयुक्त तत्वावधान में 5 दिवसीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण दिनांक 1 जनवरी, 2016 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. गणेश कौशिक (अध्यक्ष संस्कृत विद्यामंडलम्) अजय विश्वास (सहायक संचालक), डॉ. सुरेश शर्मा (सचिव), संस्कृत विद्या मंडलम्, पी. के. शर्मा (महासमुन्द), आचार्य कोमल प्राचार्य गुरुकुल कोसरंगी, योगेश्वर उपाध्याय राजिम, आचार्य सुखेन्द्र व्याख्याता (हाई स्कुल मुनगासेर) जिला संस्कृत संयोजक श्रीमती शकुन्तला शर्मा (साहित्य विद) की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत में हुआ। संस्कृत विद्यालयों के 70 से अधिक विद्वान शिक्षकों ने अपने अनुभव में बताया और कहा कि संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत संभाषणम् के प्रशिक्षण की आवश्यकता और अधिक है। पुष्प गुच्छ से मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया। स्वागत गीत की प्रस्तुति के बाद मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में यह बताया कि संस्कृत विद्या मंडलम् के प्रयास से आज छत्तीसगढ़ राज्य में 143 विद्यालय संस्कृत के संचालित हैं, जहां सामान्य विषयों के साथ व्यवसायिक संस्कृत के रूप में, वेद, साहित्य, प्रवचनम्, ज्योतिष, व्याकरणम् पौरोहित्य, दर्शन आदि का अध्यापन कराया जाता है। आयुर्वेद और योग शिक्षा भी संस्कृत विद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में संचालित है। डॉ. सुरेश शर्मा ने बताया कि संस्कृत भारती के सहयोग से विद्या मण्डलम् ने रायगढ़ जिला स्थित ग्राम गहिरा को (संस्कृत ग्राम) की घोषणा की गई है। जहाँ सभी लोग संस्कृतमय जीवन जीते हैं। सहायक संचालक अजय विश्वास जी ने संस्कृत विद्यामंडलम के कार्यों की सराहना की विद्यामंडलम् के अध्यक्ष ने मास्टर ट्रेनरों सहित प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया। कार्यक्रम में आचार्य सुखेन्द्र द्विवेदी द्वारा प्रशिक्षार्थियों को संस्कृत गीतों का सश्वर गायन कराकर अतिथियों का मन मोहा और संस्कृत मय वातावरण रहा। आचार्य कोमल ने कहा कि संस्कृत केवल पण्डितों की भाषा नहीं है। यह बात यहीं स्पष्ट हो गई कि उपस्थित शिक्षकों में आदिवासी वर्ग ही अधिक आया हुआ है। संस्कृत हम सबकी है। इसे हम सबको मिलकर बचाना होगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सम्पूर्ण व्यवस्था में योगदान दिया। प्रशिक्षक प्राचार्यों ने इस संस्कृतमय वातावरण के लिए खुले हृदय से सराहना की।

महर्षि दयानन्द जी की तपस्या देश में रंग ला रही है

आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की त्याग, तपस्या व वेद की शिक्षा देश के हर भारतीय के जीवन में अब रंग ला रही है। ये विचार राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामसुफल शास्त्री (हांसी) ने आर्य समाज सफीदों के दैनिक यज्ञ–सत्संग में प्रातः 8 बजे व्यक्त किये। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रभक्त महान् समाज सुधारक सर्वस्व त्यागी घर–बार छोड़कर देश, जाति व धर्म के लिए अपना जीवन न्योछावर करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की तपस्या इस देश के जन–जन के जीवन में काम आ रही है।

आचार्य रामसुफल शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने अन्धविश्वास, छुआछूत, बाल विवाह नारी शिक्षा, सतीप्रथा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा, अनाथों, गरीबों व भारत की आजादी आदि अनेक राष्ट्रीय सामाजिक व धार्मिक समस्याओं के समाधान के लिए जो संघर्ष किया आज उसे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में जन–जन ने स्वीकार कर लिया है तथा केन्द्र सरकार व राज्य सरकार भी देव दयानन्द के बताये रास्ते पर काफी हद तक काम करने लगी है।

यह जानकारी देते हुए आर्य समाज सफीदों के कोषाध्यक्ष श्री निवास आर्य ने बताया कि आचार्य श्री के उद्बोधन से पूर्व आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित पं. नरेन्द्र देव शास्त्री ने वेद मंत्रोच्चारण के साथ हवन–यज्ञ करवाया। यज्ञोपरान्त पुरोहित नरेन्द्र देव ने कहा कि आर्य समाज के प्रधान यादविन्द्र बराड़ एवं मंत्री संजीव गुआना महर्षि दयानन्द के विचारों व आर्य समाज के लिए रात–दिन समर्पण के साथ कटिबद्ध हैं। मा. रामचन्द्र पूर्व उपप्रधान) ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया।

इस अवसर पर देशराज आर्य, बीरसिंह लाम्बा, ज्ञानचन्द्र, मानसिंह आर्य, पुष्पा देवी आदि अनेक नर–नारी उपस्थित थे।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन (संगोष्ठी) का भव्य आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 26–27 मार्च, 2016 को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इनके अतिरिक्त, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री अरुण अबरोल, कै. रुद्रसेन जी आर्य, श्री चन्द्रभानु जी आर्य, प्रधान आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका, ठा. विक्रम सिंह जी सहित अनेकों विद्वान तथा आर्य नेता पधार रहे हैं।

इस कार्यक्रम में विद्वानों द्वारा ग्रह–उपग्रह, नक्षत्र, लग्न, मुहुर्त, जन्म कुण्डली तथा फलित ज्योतिष आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम, आर्य समाज मुम्बई विट्ठलभाई पटेल रोड सान्ताक्रुज (पश्चिम) मुम्बई में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर 26 मार्च को विशेष यज्ञ सहित प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। 27 मार्च को प्रातः 8 बजे से विशेष यज्ञ के उपरान्त 4.30 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

सभा कर्मचारी श्री माधो सिंह को मातृ शोक

सभा कर्मचारी श्री माधो सिंह की माता जी का निधन ग्राम–चापड़, जिला–नैनीताल, 12 जनवरी को हो गया। वे 94 वर्ष की थी। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ग्राम–चापड़ में 13 जनवरी को सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में कोसी नदी के किनारे किया गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। सार्वदेशिक सभा परिवार दिवंगत के प्रति शोक व्यक्त करते हुए उनकी सदगति की कामना करता है।

– सम्पादक

सभा के पूर्व कर्मचारी श्री चन्दरवीर वर्मा के पिता जी का निधन

अत्यन्त दुःख के साथ कहना है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के भूतपूर्व ड्राईवर श्री चन्दरवीर वर्मा के पूज्य पिता श्री जे. एल. वर्मा का देहान्त 26 जनवरी, 2016 को हो गया। उनकी अन्तेष्टि क्रिया स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी तथा गुरुकुल साधु आश्रम के दो ब्रह्मचारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

सार्वदेशिक सभा परिवार श्री चन्दरवीर वर्मा के परिवार में इस दुःख की घड़ी में सम्मिलित है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके पिता जी की आत्मा को सद्गति प्राप्त हो तथा दुःखी परिवार को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करें।

– सम्पादक

श्री सर्वदानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम, अलीगढ़ (उ. प्र.) में गणतन्त्र दिवस सोल्लास पूर्वक मनाया

इस राष्ट्रीय पर्व के पुनीत अवसर पर प्रतिदिन की भांति ओ३म् ध्वजारोहण किया गया। तदोपरान्त स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में सामूहिक वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें राष्ट्र की उन्नति और वैभवता हेतु विशेष आहुतियां गणमान्य व्यक्तियों ने दी।

यज्ञोपरान्त स्वामी सोम्यानन्द जी ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया तथा उपस्थित जन समूह ने सावधान की मुद्रा में वैदिक राष्ट्र प्रार्थना और राष्ट्रीय ध्वजगान सामूहिक रूप से किया। स्वामी जी ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करके अपने उद्बोधन में कहा कि संविधान में सभी मनुष्यों को समानता का अधिकार 'बसुधैव कुटुम्बकम्'' के आधार पर दिया गया है।

अतः आवश्यकता है प्रत्येक शिक्षित मानव भारतीय संविधान को सही रूप में समझें और स्वयं के शैक्षिक, नैतिक व आत्मिक स्तर को सुधारकर ही अधिकारों की मांग करें क्योंकि अधिकारों से पूर्व स्व–कर्त्तव्य का पालन प्रथम आवश्यकता है। स्वामी जी ने ब्रह्मचारियों को दीक्षा दी कि वे गुरुकुल में रहकर अपना शैक्षिक, शारीरिक, आत्मिक और नैतिक विकास करे तथा स्वाध्याय में निरन्तर लगे रहें क्योंकि उनको ही देश का भविष्य सम्भालना होगा। तदोपरान्त स्वामी भजनानन्द जी ने महर्षि दयानन्द जी के राष्ट्र प्रेम पर भजन प्रस्तुत किये और स्वामी राममुनि जी ने कहा कि सभी जन गुरुकुल की सहायता निरन्तर करते रहें। गणमान्य व्यक्तियों में श्री महान प्रताप सिंह एडवोकेट, श्री ओम प्रकाश, श्री योगेश कुमार (ग्राम प्रधान ग्वालरा), श्री भूपेन्द्र सिंह (भू. पू. पुलिस दरोगा) ने भी अपने–अपने विचार गुरुकुल के उपकार की भावना से व्यक्त किये।

गुरुकुल महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने उत्कृष्ट शारीरिक व्यायाम व आसनों का प्रदर्शन ब्रह्मचारी रवि शास्त्री, शैलेन्द्र शास्त्री, प्रवीन शास्त्री, राम अवतार शास्त्री, अम्लेश्वर शास्त्री, भुवनेश कुमार, रनजीत कुमार, तपन कुमार, मोहर पाल, यशवीर व सुनील आर्य ने किया। उन्हें प्रोत्साहन देते हुए आचार्य वैनामी सिंह, शिव कुमार शर्मा व प्राचार्य जीवन सिंह ने उपदेश दिये और कार्यक्रम का संचालन किया।

आर्य समाज दादों अलीगढ़ का 67वाँ वार्षिकोत्सव बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान

आर्य समाज मंदिर दादों अलीगढ़, उ. प्र. का 67वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 15 फरवरी, 2016 को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, इस उत्सव में आर्य जगत के बड़े–बड़े विद्वान, आर्य संन्यासी तथा भजनोपदेशक, अपने सार गर्भित उपदेश तथा संगीत से आर्य जनता का मार्ग दर्शन व जीवनोपयोगी व्यवहार का दिग्दर्शन करेंगे। आप सभी से आर्य समाज दादों की ओर से विशेष निवेदन है कि पाखण्ड व अंधविश्वास के विरुद्ध प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें और सामाजिक, धार्मिक पुण्य के भागी बनें। इस अवसर पर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे तथा बेटियों द्वारा आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे।

– डॉ. ऋषिपाल शास्त्री

माता जगदीश आर्या का जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आर्य महिला सभा की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी का 85वां जन्मदिन उनके निवास स्थान कटरा मीत सिंह में मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित बहनों ने सामूहिक भजन गाये और माता जी की लम्बी आयु के लिए प्रार्थना की। बन्दना आर्य ने माता जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि माता जी पिछले 58 वर्षों से आर्य समाज के साथ जुड़ी हुई है। वे आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर भाग लेती हैं। स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों पर चलते हुए उन्होंने अपना सारा जीवन गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता में लगा दिया। अन्त में पुष्पों की वर्षा की गई। हम उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हैं। कार्यक्रम के पश्चात जलपान करवाया गया। अंत में माता जी ने सबका धन्यवाद किया।

वैदिक धर्म प्रचार का आकर्षक कार्यक्रम सम्पन्न

जोधपुर शहर से 35 किलोमीटर दूर मथानिया बालरवां रोड पर डॉ. आर्य त्रिलोक सांखला के पारिवारिक श्रीराम कृषि फार्म पर 10 दिसम्बर, 2015 को दूसरी बार पारिवारिक सत्संग यज्ञ व भजनोपदेश का कार्यक्रम आर्यवीर दल एवं आर्य समाज जालोरियां का बास के सहयोग से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सुमेरपुर से पधारे विद्वान पं. केशवदेव जी द्वारा भजन व उपदेश का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। प्रारम्भ में श्री सेवाराम जी आर्य के सान्निध्य में दो यज्ञ वेदी पर आठ सपत्नीक यजमानों द्वारा यज्ञ कराया गया। यज्ञ में उपस्थित सभी ग्रामीण जन समूह द्वारा गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ दी गई व पश्चात् यजमानों को पुष्प वर्षा द्वारा आशीर्वाद दिलवाया।

पं. केशव देव जी द्वारा सरल व हृदय स्पर्शी भाषा में ग्रामीणों को यज्ञ, ईश्वर व परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् व गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया व इधर–उधर भटकने से चेताया।

इस कार्यक्रम में चार सौ से ज्यादा ग्रामीणजनों ने सम्मिलित होकर सत्संग का लाभ उठाया। जोधपुर से एक मिनी बस द्वारा सर्वश्री मदनलाल तंवर, बजरंग सिंह, अशोक दईया, राजेश प्रजापत, प्रदीप कच्छवाह एवं सेवाराम व श्याम आर्य सपत्नीक अनेक आर्य वीरों सहित सम्मिलित होना सभी के लिए प्रेरणादायक रहा।

कार्यक्रम के पश्चात् सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था बहुत अच्छी रही। उपस्थित बहुत से महानुभावों एवं डॉ. आर्य त्रिलोक व उनके परिवारजनों ने ऐसे कार्यक्रम बार–बार आयोजित करने का विचार रखा।

पं. केशव देव जी का परिवार के प्रमुख श्री राम जी सांखला द्वारा दक्षिणा व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

– श्याम आर्य, मंत्री आर्य समाज जालोरियां का बास, जोधपुर, राजस्थान

आर्य समाज हरदी का द्वितीय वार्षिकोत्सव 14 एवं 15 मार्च, 2016 को सम्पन्न होगा

आर्य समाज हरदी झिन्नूराम पूर्व माध्यमिक विद्यालय, पोस्ट–खेरिया बाजार, जिला–सन्त कबीरनगर–272133 (उ. प्र.) ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यहां के प्रबन्धक सन्तराम गुप्ता है। अभी यहां आर्य समाज का कोई भवन नहीं है किन्तु सत्प्रयास से भविष्य में यहां आर्य समाज स्थापित किया जायेगा। यहां का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 14 एवं 15 मार्च, 2016 को सम्पन्न होगा। परमानन्द प्रेमी, शंकर मुनि अपने अमृतोपदेश करेंगे। श्री जगदीश प्रसाद आर्य, श्री ओम प्रकाश आर्य भी अपनी उपस्थिति देंगे। मैं आर्य जगत् के सभी पत्रिकाओं के प्रकाशकों से निवेदन करना चाहता हूँ कि अपनी बची हुई पत्रिकाओं को उक्त पते पर भेजने की कृपा करें जिससे ग्रामीण जन उन्हें पढ़कर लाभ उठा सकें। यदि कोई अन्य पुस्तक भी भेजना चाहें तो उक्त पते पर भेज सकते हैं। ग्रामीण लोगों के लाभार्थ यह आर्यों से निवेदन है।

– ओम प्रकाश आर्य, हितार्थ सन्तराम गुप्ता, प्रबन्धक झिन्नूराम पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरदी, पो.–खेरिया बाजार–272123 जिला–संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

यज्ञ महिमा

**ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमंगिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त।।**

—ऋ० १०/६७/२ ; अथर्व० २०/६१/२

ऋषिः—**अयास्यः**।। देवता—**बृहस्पतिः**।। छन्दः—**निचृत्त्रिष्टुप्**।।

विनय—'यज्ञ–यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्–हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है; यज्ञ तो हमारे एक–एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को जो साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस् कहाते है; क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्–शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले–जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन–रस सूख जाए यदि ये 'अंगिरस्' उसमें निरन्तर धर्म–धारा न बहाते रहें। इन अंगिरसों को बार–बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अंगिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं? इनके लक्षण क्या हैं? इनके चार लक्षण हैं– (१) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (२) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नही होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती; इनके विचार में–मनमें–भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि–बुद्धि–रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए; और (३) ये वीर–पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान–शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (४) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं– भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो ! अंगिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

शब्दार्थ—**ऋतं शंसन्तः**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजुदीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिवः**=दिव के, 'द्यौ' के **वीराः पुत्रासः**=वीर पुत्र, **विप्रं पदं दधानाः**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अंगिरसः**=अंगिरस लोग **यज्ञस्य प्रथमं धाम**=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

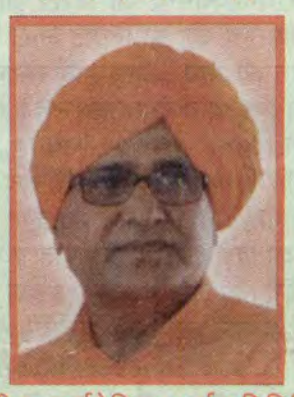

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर
सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में
विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण
20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अत: सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**" के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान–सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री–सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।